श्री नृसिंह गद्य स्तुतिः

श्री नृसिंह गद्य स्तुतिः

देवाः ||
भक्तिमात्रप्रतीत नमस्ते नमस्ते | अखिलमुनिजननिवह विहितसवनकदनकर खरचपलचरितभयद बलवदसुरपतिकृत विविधपरिभवभयचकित निजपदचलित निखिलमखमुख विरहकृशतरजलजभवमुख सकलसुरवरनिकर कारुण्याविष्कृत चंडदिव्य नृसिंहावतार स्फुरितोदग्रतारध्वनि-भिन्नांबरतार निजरणकरण रभसचलित रणदसुरगण पटुपटह विकटरवपरिगत चटुलभटरवरणित परिभवकर धरणिधर कुलिशघट्टनोद्भूत ध्वनिगंभीरात्मगर्जित निर्जितघनाघन ऊर्जितविकटगर्जित सृष्टखलतर्जित सद्गुणगणोर्जित योगिजनार्जित सर्वमलवर्जित लक्ष्मीघनकुचतटनिकटविलुंठन विलग्नकुंकुम पंकशंकाकरारुण मणिकिरणानुरंजित विगतशशाकलंक शशांकपूर्णमंडलवृत्त स्थूलधवल मुक्तामणिविघट्टित दिव्यमहाहार ललितदिव्यविहार विहितदितिजप्रहार लीलाकृतजगद्विहार संसृतिदुःखसमूहापहार विहितदनुजापहार युगांतभुवनापहार अशेषप्राणिगणविहित सुकृतदुष्कृत सुदीर्घदंडभ्रामित बृहत्कालचक्र भ्रमणकृतिलब्धप्रारंभ स्थावरजंगमात्मक सकलजगज्जाल जलधारणसमर्थ ब्रह्मांडनामधेय महापिठरकरण प्रवीणकुंभकार निरस्तसर्वविस्तार निरस्तषड्भावविकार विविधप्रकार त्रिभुवनप्रकार अनिरूपितनिजाकार नियतभिक्षादिलब्ध गतरसपरिमित भोज्यमात्रसंतोष बलविजित मदमदन निद्रादिदोष जनधनस्नेहलोभादि दृढबंधनच्छेद लब्धसौख्य सततकृत योगाभ्यास निर्मलांतःकरण योगींद्रकृतसन्निधान त्रिजगन्निधान सकलप्रधान मायापिधान सुशुभाभिधान मदविकसदसुरभट मकुटवनानलनिभनयन विलसदसिकवचभुज घनवनलवन नवरुधिरक्रमकल्पित मीनशंचत्तरंगशैवाल महाजलूक दुस्तरपंकजलनिवहकलित महासुरपृतनाकमलिनी विलोलनकेळिप्रिय मत्तवारण दुष्टजनमारण शिष्टजनतारण नित्यसुखविचारण सिद्धबलकारण सुदुष्टासुरदारण सदृशीकृतांजन जनदोषभंजन घनचिन्निरंजन निरंतरकृतभक्तवांछन गतसर्ववांछन विश्वनाटकसूत्रधार अंघ्रिधूळिजातखसिंधुधार मध्वसृक्लुतचक्रधार जनितकाम विगतकाम सुरजनकाम उद्धृतक्षम निश्चलजनसत्क्रियाक्षम सुरनतचरण धृतरथचरण विविधसुरविहरण विगतविकार विकरण विबुधजनशरण सततप्रीत त्रिगुणव्यतीत प्रणतजनवत्सल नमस्ते नमस्ते ||

इति श्री नृसिंह गद्यं |